संस्कृतस्य महिमा

(गुरुशिष्यमध्ये संस्कृतकक्षायां संस्कृतभाषायाः महत्त्वविषये रोचकः संवादः पाठेऽस्मिन् वर्तते। अनेन संवादेन छात्राणां ज्ञानवृद्धिरः जिज्ञासा च प्रवर्तते। संस्कृतस्य व्यापकत्यं शब्दरचनाशक्तिम् अन्यमुपयोगं च दर्शयति पाठोऽयम्।)

(इस पाठ में संस्कृत कक्षा में गुरु शिष्य के बीच 'संस्कृत भाषा का महत्त्व' विषय पर एक रोचक संवाद है। इस संवाद के माध्यम से छात्रों के ज्ञान में वृद्धि तथा संस्कृत भाषा के प्रति उनमें जिज्ञासा पैदा करने का प्रयास किया गया है। इसके अतिरिक्त इस
पाठ में संस्कृत की व्यापकता, शब्द रचना शक्ति तथा उसके अन्य उपयोग को भी दिखाया गया है।)

1. संस्कृतशिक्षकः कक्षां प्रविशति। छात्राः स्वस्थानादुत्थाय अभिवादनं कुर्वन्ति।
शब्दार्थ : प्रविशति = प्रवेश करता है । स्वस्थानात् = अपने स्थान से। उत्थाय =उठकर।

हिन्दी अनुवाद : संस्कृत शिक्षक कक्षा में प्रवेश करते हैं। छात्र अपने स्थान से उठकर अभिवादन करते हैं।

2. **शिक्षकः** – उपविशन्तु सर्वे। अद्य संस्कृतस्य महत्त्वं कथयामि ।

रमेशः – गुरुदेव! अपि संस्कृतस्य अध्ययनं लाभकरम्?

शिक्षकः – न जानासि वत्स? संस्कृतं विना न संस्कृतिः।

राजीवः – का नाम संस्कृतिः?

शिक्षकः – संस्कृते एव आचाराः विचाराः भावनाश्च सन्ति। यत्रेमे भवन्ति, तत्रैव संस्कृतिः

पुष्करः – कथ्यन्ति जनाःयत् इयं मृता भाषा।

शिक्षकः – वत्स! ज्ञानहीनास्ते। अस्यामेव भारतीयभाषाणां जीवनम्। अस्यामेव भारतीयाः भाषाः निर्गताः। एतदर्थं सा भाषाणां जननी कथ्यते। नेयं मृता भाषा, अपितु अजरा अमरा चैति। अद्यापि सा जीवति।

रमेशः – अस्यामेव भारतीयभाषाणां जीवनम् ?

शिक्षकः – अथ किम्? सर्वाः भारतीयभाषाः संस्कृतभाषायाः ऋणं धारयन्ति। अत्रैव प्राचीनं वेदादिशास्त्रं रचितम्।

कमालः – शब्दज्ञानाय संस्कृतकोशोऽपि वर्तते किम्?

सन्धि विच्छेद : भावनाश्च = भावनाः + च। यत्रैमें = यत्र + इमें। तत्रैव = तत्र + एव। ज्ञानहोनास्ते = ज्ञानहीनाः + ते। अस्यामेव = अस्याम् + एव। चेति = च + इति। अद्यापि = अद्य + अपि! वेदादि = वेद + आदि। संस्कृतकोशोऽपि = संस्कृतकोशः + अपि। एतदर्थं = एतत् + अर्थ। नेयं = न + इयम्।

https://www.evidyarthi.in/

शब्दार्थ : उपविशन्तु = बैठें, बैठ जाएँ। इमे =ये (स्त्रीलिंग)। निर्गता: = निकली हैं। अस्यामेव = यह ही। एतदर्थं = इस कारण से। नेयम् = यह नहीं। अथ किम और क्या? धारयन्ति = धारण करती है। शब्द ज्ञानाय = शब्द ज्ञान के लिये।

हिन्दी अनुवाद :

शिक्षक – सब बैठ जायें। आज मैं संस्कृत भाषा का महत्व कहता हूँ (बताता हूँ)।

रमेश – गुरुदेव! क्या संस्कृत का अध्ययन लाभदायक हैं?

शिक्षक – वत्स! क्या नहीं जानते हो कि संस्कृत के बिना संस्कृति नहीं है।

राजीव – संस्कृति क्या है?

शिक्षक – संस्कृत (भाषा) में ही हमारे आचार, विचार और भावनाएँ (सुरक्षित) हैं। जहाँ ये होती हैं, वहाँ ही संस्कृति होती है।

पुष्कर – लोग कहते हैं कि यह मृत भाषा है।

शिक्षक – वत्स! ऐसा कहने वाले ज्ञानहीन हैं। यह ही भारतीय भाषाओं का जीवन है। इसी से भारतीय भाषाएँ निकली हैं। इसलिये ही वह भाषाओं की जननी कही जाती है। यह मृत भाषा नहीं है, बल्कि अजर और अमर है। आज भी वह जीवित है।

रमेश – क्या यह ही भारतीय भाषाओं का जीवन है?

शिक्षक – और क्या? सभी भारतीय भाषाएँ संस्कृत भाषा का ऋण धारण करती हैं। इसी भाषा में वेद आदि प्राचीन शास्त्र रचे गये हैं।

कमाल – क्या शब्दज्ञान के लिये संस्कृत का शब्दकोश भी है?

3. **शिक्षकः**– आम् आम्। प्राचीना: नवीनाश्च अनेके संस्कृतकोशाः सन्ति। शब्दरचनाविधिरपि व्याकरणे वर्तते। तेन लक्षशः शब्दा: निर्मीयन्ते, अन्यासु भाषासु प्रदीयन्ते।

पुष्करः– अस्या: व्याकरणम् अपूर्वं तर्हि।

शिक्षक: – अत्र पाणिनिः श्रेष्ठः वैयाकरण: आसीत्। तत्सदृश: न कुत्रापि वैयाकरणो जात:।

लतिकाः – किं पाणिनिसमानः कुत्रापि वैयाकरणो नास्ति?

शिक्षक: – आम्, अस्योत्तरं सर्वत्र मौनमस्ति।

रमा: – गुरुदेव! मम पिता कथयति यत् संगणके (कंप्यूटरयन्त्रे) अपि संस्कृतं सहायकं भवति ।

शिक्षक: – सत्यं वदति ते पिता। अपि च- योगशास्त्रे पतञ्जलिकृतं योगदर्शनमपि अपूर्वम्।

कमाल: – पूज्यवर। श्रूयते यत् संस्कृते क्रियारूपाणि असंख्यानि सन्ति।

https://www.evidyarthi.in/

शिक्षक: – सत्यमेतत्। धातवः एव द्विसहस्राधिका: तेषां दशलकारेषु नाना रूपाणि भवन्ति। सर्वेषु लकारेषु नव-नव रूपाणि सन्ति।

पुष्करः – धातवोऽपि त्रिधा भवन्ति इति भवान् उक्तवान्।

शिक्षकः – आम्। केचिद् आत्मनेपदिनः, केचित् परस्मैपदिनः, केचिद् उभयपदिन:। एवं त्रिधा ते भवन्ति।

रहीमः – तदा तु भाषेयम् अतीव जटिला।

सन्धि विच्छेद : नवीनाश्च = नवीना: + च। विधिरपि = विधि: + अपि। कुत्रापि = कुत्र + अपि। अस्योत्तर = अस्य + उत्तरम्। मौनमस्ति = मौनम् + अस्ति।
सत्यमेतत् = सत्यम् + एतत्। धातवोऽपि = धातवः + अपि। भाषेयम् = भाषा + इयम्। द्विसहस्राधिका: = द्विसहस्र + अधिका: ।

शब्दार्थ : आम् = हाँ। लक्षसः = लाखों। निमीयन्ते: = बनते हैं। प्रदीयन्ते = दिये जाते हैं। तर्हि = (तब) तो। अपूर्व: = अद्वितीय है, जैसा पहले नहीं है । वैयाकरण = व्याकरण शास्त्र के ज्ञाता। द्विसहस्राधिका: = दो हजार से अधिक। त्रिधा = तीन प्रकार की। केचित् = कुछ। इयम् = यह (स्त्री०) । जटिला = कठिन।

हिन्दी अनुवाद ।

शिक्षक – हाँ, हाँ! प्राचीन एवं नवीन अनेक संस्कृत शब्दकोश हैं। व्याकरण में शब्द रचना विधि भी है। उनसे लाखों शब्द बनते हैं और अन्य भाषाओं में दिये जाते हैं ।

पुष्कर – तब तो इसकी व्याकरण अपूर्व हैं।

शिक्षक – यहाँ पाणिनि नाम के एक श्रेष्ठ वैयाकरण थे उनके समान कहीं भी कोई वैयाकरण नहीं हुआ।

लतिका – क्या पणिनि के समान कहीं भी कोई वैयाकरण नहीं हुआ?

शिक्षक – हाँ, इसके उत्तर में सब जगह मौन है। (अर्थात कहीं भी कोई वैयाकरण वैसा नहीं हुआ।)

रमा – गुरुदेव मेरे पिता कहते हैं कि संस्कृत कम्प्यूटर यन्त्र में भी सहायक है।

शिक्षक – तुम्हारे पिता सत्य कहते हैं। (और भी) इसके अलावे योगशास्त्र में पतञ्जलि रचित योगदर्शन भी अपूर्व है।

कमाल – पूज्यवर! सुना जाता है कि संस्कृत में क्रियारूप असंख्य हैं।

शिक्षक – यह सत्य है। धातुएँ ही दो हजार से अधिक हैं। उनमें दश लकारों में अनेकों रूप हैं। सभी लकारों में नव-नव रूप होते हैं।

पुष्कर – धातुएँ भी तीन प्रकार की होती हैं ऐसा आपने कहा है।

शिक्षक – हाँ, कुछ आत्मनेपदी, कुछ परस्मैपदी और कुछ उभयपदी होती हैं।

रहीम – तब तो यह भाषा बहुत ही कठिन है।

https://www.evidyarthi.in/

4. **शिक्षकः** – न न। सरलापि सा, कठिनापि सा। सामान्यप्रयोगे सरला, गूढविषयनिरूपणे जटिला। यथेच्छं प्रयोगः क्रियते।

रमा: – गुरुदेव! किं विज्ञानानि अपि संस्कृते सन्ति?

शिक्षक: – किं कथयसि भूगोल-खगोलविषये आर्यभटीयम्, बृहत्संहिता इत्यादयः ग्रन्थाः प्रसिद्धाः।

राजीवः – अतः परं नास्ति किमपि?

शिक्षकः – कथं नास्ति बीजगणितं चिकित्साशास्त्रं भौतिकविज्ञानं रसायनशास्त्रं वनस्पतिविज्ञानं विधिशास्त्रं संगीतशास्त्रम् इत्यादीनि नानाग्रन्थेषु प्रकाशितानि सन्ति। प्राचीनं भारतीयं विज्ञानं पठितव्यम्।

रमा: – किं प्रतियोगिपरीक्षासु संस्कृतम् उपयोगि वर्तते?

शिक्षकः – प्रायः सर्वत्र प्रशासनिकपरीक्षासु संस्कृतमपि ऐच्छिको विषयः।

रहीमः – तदा तु इयमतीव उपयोगिनी भाषा।

शिक्षकः – अथ किम्।

पुष्कर: – तर्हि नूनमेव सर्वैरस्माभिः मनोयोगेन संस्कृतं पठनीयम्। धन्येयं भाषा।

सन्धि विच्छेद :- सरलापि = सरला + अपि। कठिनापि = कठिना + अपि। यथेच्छं = यथा + इच्छ। इत्यादयः = इति । आदयः। नास्ति = न + अस्ति। किमपि = किम्+ अपि। इत्यादीनि = इति + आदीनि। संस्कृतमपि = संस्कृतम् + अपि। इयमतीव = इयम् + अतीव। नूनमेव = नूनम् + एव। सर्वैरस्माभिः = सर्वैः + अस्मभिः। धन्येयं = धन्या + इयम्।

शब्दार्थ – गूढविषयनिरूपणे = कठिन विषय के निरूपण में। इत्यादीनि-इत्यादि। एच्छिको = ऐच्छिकः = ईच्छा के अनुसार अपनाने योग्य। अतीव = बहुत ही। अथ किम् = और क्या नूनम् = अवश्य, निश्चय ही। सर्वैरस्माभिः = हम सभी के द्वारा। पठनीयम् = पढ़ने योग्य।

हिन्दी अनुवाद

शिक्षक – नहीं नहीं। यह सरल भी है और कठिन भी है। सामान्य प्रयोग में यह सरल है (किन्तु) गहन विषय के निरूपण में यह कठिन है। इच्छानुसार प्रयोग की जाती है।
रमा – गुरुदेव! क्या विज्ञान के विषय भी संस्कृत में हैं

शिक्षक – क्या कहती हो भूगोल तथा खगोल विषय पर आर्यभटीयम्, वृहत्संहिता इत्यादि प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं।

राजीव – क्या और भी दूसरे नहीं हैं

शिक्षक – कैसे नहीं है बीजगणित, चिकित्साशास्त्र, भौतिक विज्ञान, रसायनशास्त्र, वनस्पति विज्ञान, वास्तु विज्ञान, विधिशास्त्र, संगीतशास्त्र इत्यादि अनेक ग्रन्थों में प्रकाशित हैं। प्राचीन भारतीय विज्ञान को पढ़ना चाहिए।

रमा – क्या प्रतियोगिता की परीक्षाओं में संस्कृत उपयोगी है?

https://www.evidyarthi.in/

शिक्षक – प्रायः सब जगह प्रशासनिक परीक्षाओं में संस्कृत भी एक ऐच्छिक विषय है।

रहीम – तब तो यह बहुत उपयोगी भाषा है।

शिक्षक – और क्या (निश्चय ही, है।)

पुष्कर – तब तो निश्चय ही हमलोगों द्वारा मन लगा कर संस्कृत पढ़ी जानी चाहिए (अर्थात् हमें निश्चय ही मनोयोग पूर्व संस्कृत पढ़ना चाहिए)। यह भाषा धन्य है।

सारांश

इस पाठ में संस्कृत भाषा के महत्त्व का वर्णन किया गया है। संस्कृत भाषा में ही संस्कार है और संस्कृति है। चारों वेद, अठारह पुराण और सारे उपनिषद् संस्कृत में हैं। सभी शास्त्र ही संस्कृत भाषा में हैं कम्प्यूटर यन्त्र में भी यह भाषा अत्यन्त सहायकहो सकती है। विज्ञान के विषय-यथा भूगोल, खगोल विज्ञान, चिकित्साशास्त्र, रसायनशास्त्र, भौतिक विज्ञान, विधि विज्ञान, वास्तु विज्ञान, संगीत शास्त्र, बीजगणित इत्यादि भी संस्कृत के विभिन्न ग्रन्थों में विद्यमान हैं। अतः प्राचीन भारतीय विज्ञान को पढ़ना चाहिए। साथ ही यह भाषा प्रशासनिक प्रतियोगी परीक्षाओं के लिये भी उपयोगी है। क्योंकि प्रायः सब जगह यह इन परीक्षाओं में यह एक ऐच्छिक विषय है। इन कारणों से हमें निश्चय ही मन लगाकर संस्कृत भाषा पढ़ना चाहिए।

व्याकरण

उत्थाय
1. प्रकृति-प्रत्ययविभाग-व्युत्पतिः

संस्कृतिः = सम् + √कृ + क्तिन्
संस्कृतम् = सम् + √कृ + क्त
उत्थान = उद् + √स्था + ल्यप्
मृता = √मृञ् + क्त + टाप्
त्रिधा = त्रि + धा (तद्धित प्रत्यय)
आर्यभटीयम् = आर्यभट + छ
तर्हि = तद् + र्हिल्
जीवनम् = √जीव्+ ल्युट्
जटिला = जटा + इलच् + टाप्

https://www.evidyarthi.in/